Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 5, Issue 1 – 2021
ISSN: 2581-4044

मीडिया और साहित्य

डॉ. लिबी चेरियान[1]

[1]*अध्यापिका, हिंदी विभाग, एम.ए.इंटरनाशनल स्कूल, कोतमंगलम, एरनाकुलम, केरला ।*

मीडिया और साहित्य

मीडिया और साहित्य मानव जीवन के अनुपक्षेणीय अंग है। साइबर संस्कृति और ई-नेटवर्क की दुनिया में नयी पीढ़ी जी रही है। कोरोणा के ज़रिए यह संस्कृति बढ़ती जा रही है। इसलिए नयी मानव संस्कृति इलक्ट्रोनिक रोबोट कीतरह यांत्रिक मानव संस्कृति बन गयी है। साहित्य भी मीडिया के चंगुल में फँस गया है।

मानवजीवन में साहित्य

साहित्यकार न होते हुए भी सभी मानव के अंदर में साहित्यका पुट है। गाना फुसफुसाना, सिनेमाओं को पसंद करना आदि इसका मिसाल है। साहित्य समाज से उत्पन्न समाज का चित्र है। सामाजिक-सांस्कृतिक बदलाव की दिशायें और ऐतिहासिक परिवेश साहित्य से मिलते हैं। साहित्य कभी-कभी भविष्यवाणी भी देता है। वर्तमान मानव जीवन के तमाम परिवेशों के तब्दीलों में मीडिया का प्रभाव उल्लेखनीय है।

साहित्य के दो अर्थ होते हैं- पहला हितकारी एवं सहित। अर्थात साथ होने का भाव। यह तथ्य याहित्य को समाज के साथ गहरे रूप से आबद्ध सिद्ध कर देता है। दूसरा साहित्य वह होता है जो हमारे भावों और विचारों को इकट्ठा रखकर या मानवजाति से एक सूत्रता से उत्पन्न करे। साहित्य की अपनी पहचान है। साहित्य सच्चा इतिहास है। अपने देश काल का चित्रण इसमें होता है। साहित्यकारों की कलम कल्पना के साथ वास्तविकता की पगडंडी पर चलती है।

मानवजीवन में मीडिया

आज का युग विज्ञान और कंप्यूटर का युग है। मीडिया विज्ञान की देन है। इंटरनेट के द्वारा विश्व के किसी कोने तक पहुँच पाना आसान है। ई-संसार मानव के ड्राइङरूम में मिलता है। पहले ई ईश्वर के लिए प्रयुक्त किया जाता था। अब ई जीवन के तमाम पक्षों के लिए प्रयुक्त

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

है। ऊँगली के नुक्से में पूरा विश्व घूम रहा है। कोरोणा ने पढाई-शिक्षा को भी इस दायरे के भीतर पहुँचाया। इसलिए मीडिया ने आज के संसार को अपने कमरे में कैद कर रखा है।

एक मानव दूसरे मानव से जुडने केलिए जो संपर्क साधन करता है उसे संचार साधन कहते हैं। भाषा, साहित्य, नाटक संचार माध्यम हैं। समाचार पत्र, टेलीफोन, दूरदर्शन, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि तकनीकी संचार साधन हैं। मानव समाज के विकासक्रम में अब तक तीन क्रांतियाँ हुईं हैं। पहली कृषि से, दूसरी औद्ययोगीकरण से और तीसरी कंप्यूटर क्रांति से संबंधित हैं। आधुनिकता से उत्तराधुनिकता की ओर, वहाँ से उत्तर-उत्तराधुनिकता एवं डिजीटल युग की ओर तेज़ी से भागनेवाले संसार में सभी भागों से उपलब्ध सामग्री को इंटरनेट आपस में जोडने का काम करता है। आधुनिक मानव की ज़िंदगी में मीडिया की सहायता चौबीसों घंटे मिलने से जो एक अध्यापक से ऊपर विज्ञान कोश की भाँति सभी विषयों के ऐनसैक्लोपीडिया बन जाते हैं। जिसमें सभी विषय, सभी देश, सभी समय और सभी मानव होते हैं। “आज मीडिया और साहित्य दोनों विस्तृत क्षेत्र हैं। साहित्य और मीडिया आज दो देश हैं।”[1]

साहित्य मीडिया के संदर्भ में

साहित्य हमारे दिल को छूने तो मीडिया के सभी दृश्य हमारे विज़न और विचार को। साहित्य समाज की समस्याओं के कारणों को जाँचते तो मीडिया में दृश्यों का विवरणात्मक वाचन होता है। उदाहरण केलिए मुंबई के ताज होटल में आतंकवादियों के आक्रमण के वक्त हर मीडिया में हर दृश्य को दिखाकर विवरण दिया दिया जाता था। लेकिन साहित्य में आतंकवादियों के साथ उनके मानसिक स्तर का सोच-विचार, जीवन नष्ट हुए मानव के परिवारों की दुख-दर्द भरी कथायें और हमारे देश की आत्मा में पडी हुई दरारों को भी प्रकाश डालने का प्रयास किया जा सकता। मीडिया में विभिन्न डोक्युमेंट्री के रूप में ऐसा प्रयास हो रहा है। लेकिन आज के कोरोणा संकट साहित्य को डिजीटल रूप प्रदान करने में अहम भूमिका दे रहा है। क्योंकि शिक्षा तक आज मीडिया द्वारा संपन्न हो रही है।

साहित्य जब मुद्रित रूप में हैं तब उनकी कई विशेषताएँ होती हैं। लेकिन रूपांतरण करते वक्त उनकी आंतरिक स्वरूप बदल जाता है। इसलिए रूपांतरण के वक्त यह ध्यान रखना

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

ज़रूर होता है कि उनकी आत्मा में परिवर्तन न हो। ढाँचे में बदलाव तो माध्यम की अपनी माँग के कारण होता है। किंतु रचना की आत्मा को सब रूप में समान रखना चाहिए।

साहित्यिक विधाओं को दृश्य माध्यमों में रूपांतरण की आवश्यकता क्या है? दृश्य माध्यमों के गुण अधिक लोगों तक पहुंच सकते हैं। साहित्य सीधे इतने बडे समूह तक न पहुँच सकता। साहित्य शिक्षित लोग पढ़ता है। लेकिन मीडिया से शिक्षित एवं अशिक्षित लोगों को भी लाभ मिलता है। शिक्षित व्यक्ति साहित्य प्रेमी न होने पर भी मीडिया द्वारा वह भी आस्वादन करता है। लिखित साहित्य की अपेक्षा दृश्य माध्यम से प्रस्तुत की गयी सामग्री अपनीरोचकता बिंबधर्मिता, दृश्यात्मकता, संगीतऔर नाटकीयता के गुणों से दर्शकों को अधिक प्रभावित करती है। ऐसी सामग्री को बच्चा, युवा, बालक, वृद्ध और स्त्री-पुरुष एक साथ देख सकते हैं। साहित्य रचना का रसास्वादन एक समय में एक व्यक्ति और कथा सुना तो छोटा सा समूह प्राप्त होता है।

नव इलक्ट्रोनिक माध्यम द्वारा साहित्य अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। 'रामायण, महाभारत, रामचरितमानस' ही नहीं प्रेमचंद के 'शतरंज के खिलाडी, ठाकुर का कुआँ, नमक का दारोगा', जयशंकर की 'मधुआ', धर्मवीर भारती की 'बंद गली का, आखिरी कलाम', मालती जोशी की 'मध्यांतर', उषा प्रियंवदा की 'पैरेम्बुलेटर', मैत्रेयी पुष्पा की 'फैसला', कमलेश्वर की कई कहानियाँ आदि। साहित्य रचनाओं की बुनियादी ढाँचे पर निर्मित फिल्मों की लंबी कतार हमारे सामने उपस्थित हैं। यह परंपरा यहाँ सीमित नहींपहाड से निकलती निर्झर की भाँति आगे बह रही है।

इंटरनेट और साहित्य

इंटरनेट आज की ज़िंदगी का अभिन्न हिस्सा है। यह इस शताब्दी ने मनुष्यता को दिया सर्वश्रेष्ठ उपहार है जो हाई-टेक का पर्याय है और सूचना क्रांति का संवाहक। यह कंप्यूटर और टेलीफोन की व्यवस्थित जोड-गाँठ से बना संजाल है। इंटरनेट का विकास और स्थापन संयुक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय विकास अकादमी 1990 में किया गया। वस्तुत: इसका जन्म सन् 1969 में हुआ। अमेरिका की सर्वोन्नत रक्षा अनुसंधान पतियोजना एजेंसी ने कैलीफोर्निया विश्वविद्ध्यालय के कुछ छात्रों को एक परियोजना पर काम करने के लिए

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

दिया। परियोजना की समस्या थी दो या अधिक कंप्यूटरों के बीच संवाद किस तरह स्थापित हो? इस परियोजना को पूरा करने में उस समय अध्ययनरत लियोनार्ड क्लीनराक नामक शोधछात्र को सफलता मिली थी। इस पारिवारिक नेटवर्क पर अमेरिका के रक्षा अनुसंधान विभाग का ही अधिकार था, किंतु आज यह अमेरिका के रक्षा अनुसंधान विभाग से निकलकर आइ.बी.एम., माइक्रोसोफ्ट, एपल, नेट्सकेप जैसी व्यावसायिक कंपनियों के हाथों में आ गया है।

किताबों, शोधपत्रों की कीमतों में वृद्धिकी तुलना में इंटरनेट कम खर्चीला माध्यम है। खेल, चाट, गपशप, मनोरंजन, शिक्षा, पाककला, आध्यात्मिक भाषण, ई-बैंकिङ, ई-वाणिज्य, ई-प्रशासन, ई-कान्फ्रेंस......सब इंटरनेट में हैं। सर्च करे तो यह अजीब दुनिया देश-काल-समय बंधन के बिनाहमारे संमुख उभर आयें। इसके द्वारा पुस्तकों की बिक्री भी बढ़ती जा रही है। साहित्य संबंधी सभी सूचनायें इंटरनेट में दिखायी पड़ते हैं। पुस्तक और साहित्यकार संबंधी जानकारी नेट द्वारा जानना आसान हो गया। पुराने ज़माने में कई घंटों तक वाचन करके कई पुस्तकों द्वारा मिले हु ए ज्ञानार्जन अब कैप्सूल के रूप में नेट द्वारा मिलता है।

छापे के मशीन से लेकर इंटरनेट तक की पाठयात्रा एक मीडिया के माहौल से दूसरे मीडिया माहौल के बीच की यात्रा है। आज गंलोबल पाठ प्रांतीय और प्रांतीय पाठ ग्लोबल है। आज लेखक को प्रकाशक की ज़रूरत नहीं, वह स्वयं प्रकाशक बन सकता है। साहित्य का परंपरागत प्रभामंडल टूट गया है। आज साहित्य का नया रूप, जिसे हम ओनलाइन साहित्य या वेबसाइट साहित्य या तरंग साहित्य कह सकते हैं। वाचिक परंपरा से लिखित परंपरा में कदम रखा। प्रेस क्रांति ने लिखित साहित्यिक परंपरा को ऊँचाइयों तक पहुँचाया। पुस्तक और पत्र-पत्रिकाओं ने नई लिखित परंपरा का निर्माण किया। हर एक व्यक्ति से यू-ट्यूब चैनल शुरू होनेवाले समसामयिक समाज पोथी या पांडुलिपि युग की विदाई की वेला थी।

डिजिटल युग के छापे की नई तकनीक और कंप्यूटर के जन्म ने पुस्तक या छपे हुए शब्द की माँग को गुणात्मक तौर पर बढ़ा दिया। इंटरनेट के आने के बाद पुस्तक और साहित्य की दुनिया पूरी तरह बदल गयी। कोरोणा की वज़ह से पठन-पाठन की प्रकृति ही बदल गयी। सब पढ़ाई नेट के द्वारा संपन्न हो रही है। इस कोरोणा संक्रांति के संकट में अध्यापक-विद्ध्यार्थी का रिश्ता ही इंटरनेट बन जा रहा है। लेकिन समाज के निम्न पक्ष इससे वंचित है। उच्च

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 5, Issue 1 – 2021
ISSN: 2581-4044

वर्ग के सामने सभी सुविधाएँ होती हैं, परंतु निम्न वर्ग के छात्र इस युग में पीछे हट जा रहे हैं क्योंकि उनके सामने इंरनेट, कंप्यूटर, स्मार्ट-फोन नहीं है। प्रेस युग और कंप्यूटर युग के साहित्य में फर्क यह है कि आज किताब में लिखित शब्द की तुलना में इंटरनेट स्क्रीन पर लिखा शब्द ज़्यादा स्पष्ट और व्याख्यायोग्य है। आज हम पुस्तक, अखबार, पत्रिका के पुराने अनुभव से भिन्न परिवेशों से गुज़र रहे हैं। इसप्रकार मीडिया और साहित्य परस्पर जुडे हुए आधुनिक मानव के दो विशाल क्षेत्र हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. राजेंन्द्र यादव -हंस -जुलाई 2010 पृ .सं. 2.

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.